कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) .....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन ..... शनिवार .....

दिनांक ..... 9/03/19 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज का उपयोग में लिया गया है। 165/2019

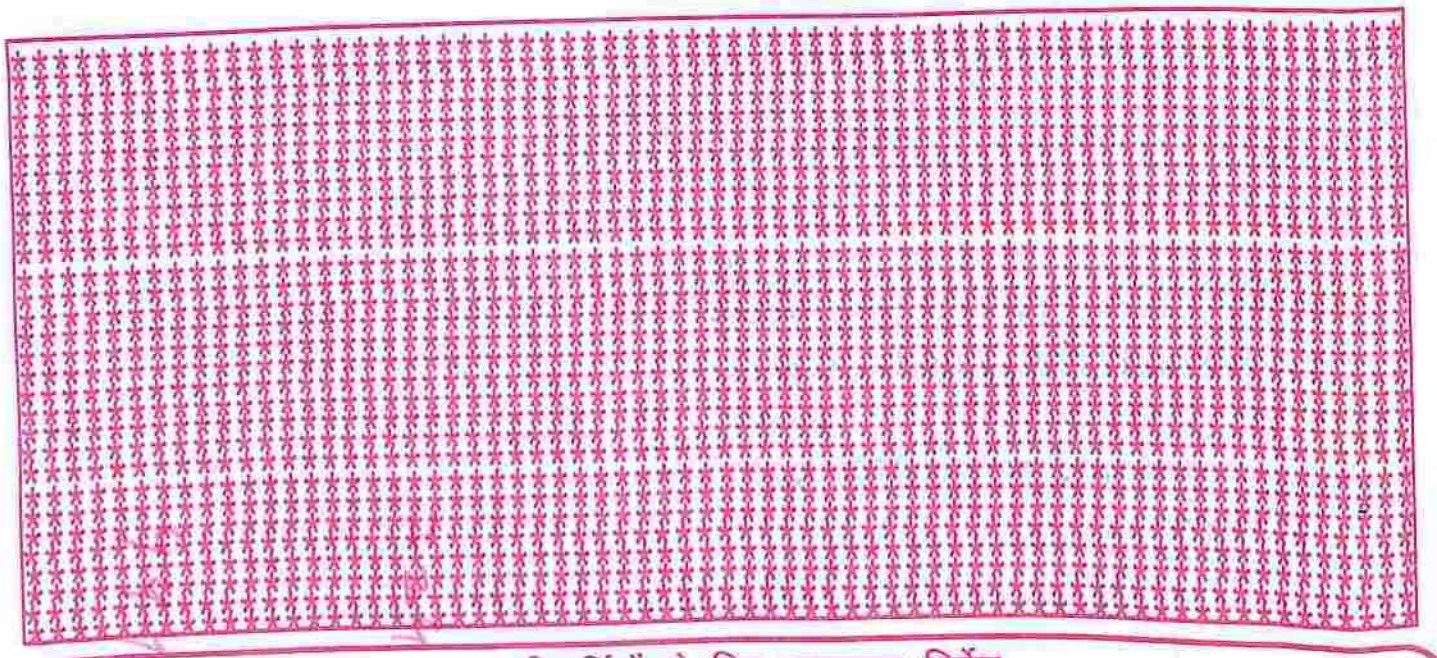

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

1. (अ). एक साहित्यकार का यह आदर्श होना अनिवार्यता है कि उसमें कर्मभाव का गुण विद्यमान हो, पक्षपात और संकीर्णता की भावना से परे होकर अपने साहित्यकर्म का निवाहन करें।

(ब). धार्मिकता का अभिमान करने वाला पुरुष ईश्वर की दया का पात्र नहीं हो सकता है क्योंकि ऐसा मनुष्य कर्मशक्ति के अभाव से ग्रसित होता है तथा उसे अपनी धार्मिकता पर घमण्ड होता है, जो व्यक्ति को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक का कार्य करती है।

2-अ). उन्नति के सन्दर्भ में मनुष्य की यह विशेषता होनी चाहिए कि वह अपने कार्य में असफल रहने पर भी विराश न हो एवं एक बार गिरकर पुनः नयी ऊर्जा एवं आशा के साथ प्रगति पर अग्रसर रहे, ऐसा व्यक्ति ही उन्नति के चरमोत्कर्ष को स्पर्श कर पाता है।

(ब). प्रस्तुत काव्यांश हमें जीवन में जीने की कला को सिखाते हुए यह सन्देश देता है कि मनुष्य को कभी भी जीवन में हताश नहीं होना चाहिए अगर असफल होकर गिर भी जाये तो पुनः नयी ऊर्जा के साथ बढ़ते रहना चाहिए और अपना जीवन आनन्दमय बनाना चाहिए।

(खण्ड-ख)

3. (अ).

भाषा	बोली
(i). भाषा का क्षेत्र असीमित होता है अर्थात भाषा सर्वव्यापी होती है।	(i). बोली एक सीमित दायरे की होती है अर्थात यह भाषा के अन्तर्गत ही आती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
	(i)	भाषा में विपुल साहित्यों की रचना की जाती है।	बोली में विपुल साहित्य की रचना नहीं की जाती है।
	(ii)	भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण की परमावश्यकता होती है।	बोली के लिए ऐसी कोई आवश्यकता नहीं होती

(ब) भाषा के निम्न दो रूप हैं-

(i) लिखित भाषा: भाषा का वह रूप जिसे लिखकर व्यक्त किया जाता है, लिखित भाषा कहलाती है।

(ii) मौखिक भाषा: भाषा का वह रूप जिसे मौखिक अर्थात बोलकर व्यक्त किया जाता है, मौखिक भाषा कहलाती है।

4 (अ) वाह! → विस्मयादिबोधक अव्यय, हर्ष सूचक शब्द

(ब) रोज → कालवाचक अव्यय, एकवचन, पुल्लिंग, वह ...

5 (अ) निहित शब्द शक्ति: लक्षणा शब्दशक्ति

प्रस्तुत पंक्ति में लक्षणा शब्दशक्ति है क्योंकि इसमें 'हवा से बातें करना' एक लोकप्रचलित मुहावरा है जिसका अर्थ अत्यधिक तेज होने से है अतः इसमें लक्षणा शब्द शक्ति निहित है। इसमें सुरेश को अत्यधिक सुंदर खिलाड़ी बता उसका लक्षण प्रस्तुत किया है।

6. उपर्युक्त काव्य पंक्ति में निहित अलंकार 'विरोधाभास अलंकार' है।

क्योंकि सामान्य अर्थों के द्वारा देखें तो विरोध का सा भाव जानने को मिलता है वस्तुतः श्याम रंग में डूबने पर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वस्तु का उज्जवल होना संभव नहीं है, परन्तु वास्तविक अर्थ में कोई विद्या प्रतीत नहीं हो रहा है ये कथन श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबने पर जीवन महान बन जाता है इस सन्दर्भ में कथित है।

(7). (अ). Eligible → पात्र / योग्य
(ब). Gazett → राजपत्र

(8). राजस्थान सरकार
खादी ग्रामोद्योग, जयपुर (राजस्थान)

अ.सू. क्र.-खा.ग्रा/213A/2019 — दिनांक: 9 मार्च 2019

अधिसूचना

खादी ग्रामोद्योग, राजस्थान की ~~राजस्थान~~ सरकार यह सूचना सम्प्रेषित करती है कि दिनांक 28 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2019 तक महात्मा गांधी की सादृशी (150वीं जयन्ती) के उपलक्ष में रियाती दरें पर वस्त्रों में 25% की छूट अनिवार्यतः देती है इसका विवरण वेब पोर्टल पर जिसकी वेबसाइट www.KhadiGramodhyogRh.Sarkar.com पर उपलब्ध करा दी जायेगी। सभी दुकान दार बंधुओं से अनुरोध हैं कि वे इसके लिए अपना पंजीयन अवश्य करायें। बिना पंजीयन नियम लागू नहीं होंगे।
इसका विवरण एवं पंजीयन प्रपत्र वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सूचनार्थ प्रतिलिपि: — आज्ञा से

(i) भारतीय मुद्रणालय. — शासन मुद्रणालय एवं उद्योग
~~(ii) भारतीय खादी औद्योग आयोग भारत सरकार~~ — (सचिव) राजस्थान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(9). निबन्ध:

विषय: स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है-

संकेतबिन्दु:

• प्रस्तावना • स्वास्थ्य के सुधार हेतु चलायेगये अभियान एवं उपाय • देश की स्वास्थ्य दर और उसका प्रभाव एवं उपाय • उपसंहार.

• प्रस्तावना: स्वास्थ्य शब्द अपने आप में अनेक गूढ अर्थ एवं रहस्य लिये है। प्राचीन काल से ही भारत विभिन्न योगासनों एवं तपोबलों के प्रभाव से स्वस्थ रहता आया है आधुनिक विद्वानों का भी यही मत है कि-

'स्वस्थ व्यक्ति में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है'

परन्तु वर्तमानकाल में फैली अन्धानुकरणीयता, श्रेष्ठ दिखने की ललक अपने प्रति अजागरूकता एवं अन्य कारकों की वजह से स्वास्थ्य दरों में गिरावट आयी है लोग अस्वस्थ हो रहे हैं इनके सुधार हेतु अनेक सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं जो सतत रूप से कार्यसंचालित है।

• स्वास्थ्य के सुधार में चलायेगये अभियान एवं उपाय: भारत के बढ़ते जनसंख्या एवं घटते स्वास्थ्यदर को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ही नहीं अपितु विभिन्न छोटी एवं बड़ी संस्थाएँ (N.G.O., W.H.O., N... आदि स्वास्थ्य के अभियान चलाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं ये स्वच्छता को ही सबसे बड़ा कारण मानते हैं कि स्वास्थ्य दर में दिनों दिन गिरावट आ रही है लोग अस्वस्थ से ग्रसित होरहे हैं। चारों ओर के अस्वच्छ वातावरण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

जहाँ लोग स्वास्थ्य तो दूर ठीक से रह भी नहीं पा रहे हैं वहाँ स्वास्थ्य स्तर कैसे बढ़ सकता है ? | आज कल इसके प्रमुख कारण प्रदूषित जलवायु एवं लोगों की मानसिकता है आज लोग घर की शुद्ध सामग्री को छोड़कर बाजारू पन एवं वाजारिक भोजन को बढ़ावा दे रहे है उन्हें यह स्मरण नहीं है कि - स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है, वे अपने अन्धानुकरण एवं शौक बनने के लालच के चलते अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान कार्य कर रहे हैं. अधिकतर स्वास्थ्य स्तर में गिरावट ग्रामीण अंचल की अपेक्षा शहरी एवं फैशनपरस्त लोगों में दिखती है

अतः हमें यह स्वच्छता से स्वास्थ्य बनाने का कार्य दूसरों से नहीं अपितु स्वयं से आरम्भ करना चाहिए | अधिकाधिक स्वच्छता रखना भी अस्वस्थता का बड़ा कारण बन जाती है। यथा 'जीवन स्वस्थ बनेगा तब, जनसमूह स्वस्थ रहेगा तब'।

- देश की स्वास्थ्य दर और इस पर प्रभाव अधिकाधिक एवं स्वच्छता से स्वच्छता के स्तर में बढ़ावा आता है परन्तु आजकल के लोगों की अपनत्व एवं असजगता की भावना के चलते यह सब असम्भव सा हो गया है लोग अधिकाधिक दवाईयों के सेवन से स्वास्थ्य बनाने की अपेक्षा अपने जीवन को क्षतिपूर्ण करते है स्वास्थ्य का देश की स्वास्थ्य पर ठीक वैसे ही प्रभाव पड़ता है जैसे किसी आवश्यक वस्तु की जरूरत का किसी अभावयुक्त व्यक्ति के मिलने पर प्रभाव पड़ता है सन 2015 की सरकार द्वारा भारतीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मण्डल की ओर से दिये गये आँकड़े मात्र 73.58% थे परन्तु वर्तमान में स्वास्थ्य दर के आंकड़े 94.33% हुये है जो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

भारत सरकार द्वारा चलाये अभियानों एवं उपायों जैसे विज्ञापनों, चित्राकनों, गाँव-गाँव रैलियों मे जाकर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक बनाकर एवं अन्य प्रत्यक्ष एवं परोक्ष माध्यमों से सार्थक हो पाये है इसके (स्वास्थ्य दर के बढ़ावे के लिए) भारत सरकार मे पल्सपोलियो, टीकाकरण, इन्द्रधनुष मिशन, जननी सुरक्षा, हैजा, टीबी, कालाजार, खाँसी, हैपेटाइटिस-B एवं पीलिया एड्स (HIV) आदि से बचाव के अनेक उपाय एवं अभियान चलाये है जिससे स्वास्थ्य दर मे ही नहीं अपितु लोगों कि विकलांगता एवं विकृतिता एवं जन्म-मृत्युदर में भी किफायत हुई है

उपसंहार: हमें सदैव मातापिता के चारों ओर के वातावरण को स्वच्छ रखकर स्वास्थ्य स्तर को बढ़ाने के लिए उपाय करने चाहिए। दिये गये आँकड़े अरबन (शहरी) जन सामान्य के आँकड़ों पर निर्भर है फिर भी सदैव स्वास्थ्य के प्रति जागरूक एवं सजग रहना चाहिए

खण्ड-(ग).

(a). सप्रसंग (सन्दर्भ + प्रसंग): प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के अध्याय - 5-'भूषण के कवित्त' से उद्धृत है जिसके रचयिता 'महाकवि भूषण' स्वयं है।

→ इस कवित्त खण्ड में भूषण ने शिवाजी के उत्तरदायित्वों एवं उनके वीरता, पराक्रम और सज्जनकारी पालनहारी एवं मुगलों के संहार कारी के रूप में चित्रित किया है।

व्याख्या: कविवर भूषण कहते है सरजा शिवाजी अत्यन्त पराक्रमी, शौर्यता से परिपूर्ण है, वे इस प्रकार से अपनी प्रमुख उत्तरदायित्वों का निर्वाहन करते है, कि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मुगलों के अत्याचार से आतंकित अपनी प्रजा की हर संभव दृष्टि से रक्षा करते हैं। जिस प्रकार गरुड़ पक्षी का दावा अर्थात अधिकार नागों के समूह पर होता है, हिरणों के झुण्ड पर मृगराज सिंह का अधिकार रहता है जिस प्रकार विशालकाय गिद्ध (बाज) का अधिकार सभी पक्षियों के झुण्ड पर होता है, उसी प्रकार सरजा शिवाजी का अधिकार मुगलों पर होता है तथा भूषण कहते हैं कि इस अखण्ड, अनन्त संसार के महान भूभाग पर छत्रपति शिवाजी का अधिकार है।

विशेष:- (i) कवि भूषण ने शिवाजी के मुगलों पर अधिकार के होने के बताने हेतु सुंदर उदाहरण जैसे- गिद्ध, गरुण मृगराज सिंह एवं पुरहूत (महानपुरुषों) के प्रयोग से चार-चाँद लगा दिये हैं।

(ii) प्रस्तुत कवित्तखण्ड मे वीर रस, अतिशयोक्ति अलंकार नाद सौन्दर्य एवं ओजगुण विद्यमान है जिससे कवित्त अत्यन्त सरस एवं सुरम्य बन गया है।

(iii) प्रस्तुत कवित्त की भाषा खड़ी बोली हिन्दी एवं बोधगम्यात्मक भाषा का उपयोग हुआ है।

II. सप्रसंग (सन्दर्भ+ प्रसंग): प्रस्तुत गद्यखण्ड हमारी पाठ्यपुस्तक सृजन के अध्याय-10-'भय' से अवतरित है जिस पर अपनी लेखनी चलाने का महान कार्य 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने किया है।

→ प्रस्तुत गद्य खण्ड में लेखक ने निर्भयता के सम्पादन की दोनों शर्तों को सुंदर ढंग से उकेरा है एवं मनुष्य को निर्भय रहकर जीवन जीने का संदेश दिया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या: लेखक कहते है कि आजकल मानव जीवन मे भय की अपरिहार्यता का बड़ा ही बोल-बाला है। जिस प्रकार प्रत्येक प्राणी को सुखी (प्रसन्नचित) रहने का अधिकार है, उसी प्रकार भयोन्मुक्ति न रहने का भी अधिकार है क्योंकि ये प्रयत्न साध्य घटनाएँ है निर्भय रहने के लिए व्यक्ति के लिए आवश्यक शर्तें यह है कि उसे किसी भी भाँति का कष्ट न हो इसके लिए उच्च चरित्र का होना अत्यावश्यक है तथा दूसरी ओर हमें कोई कष्ट पहुँचाने का साहस न करें इसके लिए हमें अपनी शक्ति एवं पुरुषार्थ पर विश्वास होना ~~है~~ चाहिए परन्तु अतिआत्म विश्वास नहीं। तभी जीवन की सार्थकता ~~सिद्ध~~ सिद्ध होती है।

विशेष: (i) लेखक ने व्यक्ति को निर्भयता के सम्पादन के लिए दो अपरिहार्य शर्तें बतायी है जो मानव जीवन के निर्भयता के लिए आवश्यक एवं आधारशिला है।

(ii) लेखक ने प्रस्तुत गद्यखण्ड मे सरल, सरस, सहज एवं बोधगम्य खड़ी बोली के साथ उपदेशात्मक एवं निबंधात्मक शैली का सुंदर चित्रांकन किया है।

12. प्रस्तुत कथन 'सरलता एवं सहजता से जीवन जीवन जीने मे जो खुशी मिलती है वह बाह्य तड़क-भड़क मे नहीं बल्कि अन्तर की दृढ़ता मे है' पूर्णतः न्योचित एवं शाश्वत है। क्यों आजकल लोग बढ़ती अन्धानुकरण, बोलबाला, दिखावेपन, अपने को दूसरे से श्रेष्ठ जताने एवं फैशनपरस्ती के कारण अपनी संस्कृति एवं रिश्तों की प्रगाढ़ता को नष्ट करता जा रहा है। जिससे रिश्ते केवल नाम मात्र के शेष रह गये है उनमें प्रगाढ़ता एवं गर्माहट का कोई स्थान नहीं बचा है आजकल लो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

इस भड़कीली एवं तकल्लुफ प्रधान जीवन शैली को अपने जीवन की कला समझते है इस युग मे सभ्य एवं शिक्षित बनने के नाटक में अन्धे बनकर भाग ले रहे है जो समाज के पतन का कारण बनता है परन्तु एकांकी में जहाँ एक ओर एक साधारण जीवन शैली जीने वाला एवं गरीब अनपढ़ परिवार मे पला-बढ़ा बसंत है, जो अपने भुलक्कड़पन के कारण गलत तौलिया इस्तेमाल करता है उसके अनुसार रोग संक्रमण से नहीं अपितु प्रतिरक्षी कीटाणुओं की कमी से होते है। वह सादा जीवन उच्च विचार' की धारणा वाला व्यक्ति है।

दूसरी ओर मधु जो सभ्य बनने के चक्कर में बीवियों धारियों वाले तौलियों का उपयोग करती है वह समझती है कि रोग तौलियों के बदलकर इस्तेमाल से नहीं फैलते उसे स्वच्छता सलीका उसकी विरासत मे मिले है, परन्तु इसी कारण उनमें अक्सर खुशी की अपेक्षा कुंठता एवं नोंकझोंक बनी रहती है जो पारिवारिक आपसी कलह का कारण बनती है।

अत: उपर्युक्त दृष्टान्तों से पूर्णत: प्रमाणित होता है कि सरलता एवं मृदुलता से जीवन जीने की कला को अपनाना चाहिए ताकि रिश्तो में मधुरता एवं प्रगाढ़ता का वातावरण बन सके।

13. रहीम के नीतिगत दोहे लोगों को लोकव्यवहार की शिक्षा प्रदान करते है। रहीम दोहे लोगो के हृदय को सीधे ही प्रभावित कर परोपकार, संगति का प्रभाव एवं परदु:खकातरता, मान-सम्मान एवं स्वाभिमान की शिक्षा देते है रहीम के दोहे में लोकव्यवहार की शिक्षा का गूढ़ रहस्य छिपा है उनके अनुसार हमें कदाचित छोटो की निंदा नही करनी चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

पिघलते हिम शिखरों के शिखर, वादियाँ एवं रुई के फोहों के समान रोमांचित करने वाले स्नोफाल ने स्विटजरलैण्ड की प्राकृतिक छटा का एवं परिवेश का स्मरण करा देते हैं। अतः लेखक ने इन मनोरम एवं हृदयग्राही चित्रांकन की तुलना स्विटजरलैंड से की है।

18. कविपरिचयः

हिन्दी साहित्य की हालावादी शाखा के अप्रतिम (श्रेष्ठ) प्रवर्तक कविवर हरिवंशराय का जन्म सन् 1907 ई. में इलाहबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इनके पिता का नाम 'प्रतापनारायण' तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। इनकी पत्नियों के नाम 'श्यामा' एवं 'तेजी' थी। ये फारसी कवि उमरखैयाम के जीवन आदर्शों से अत्यधिक प्रभावित थे।

इनके काव्य अधिकर रुबाइयाँ छन्द में अवतरित हुए हैं जिनमें प्रमुखतः निश्छल प्रेम एवं आनन्द की मस्ती का संदेश गूढ़ एवं रहस्यात्मकता के साथ छिपा हुआ है।

इन्होंने खड़ीबोली हिन्दी में अपनी लेखनी चलाई। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—

मधुशाला, मधुबाला, निशानिमंत्रण, मधुकलश, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, नये पुराने झरोखे, टूटीफूटी कड़ियाँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, आदि हैं।

इनके अनुवाद ग्रंथ हैमलेट एवं जनगीता तथा मैकबेथ रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी प्रमुख भूमिका निभाने

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करते हुए इनका देहावसान सन् 1903 ई. को हुआ।

(19). नायिका नायक को पत्र इसलिए नहीं लिख पा रही है कि प्रथमकाल उसे लोकलज्जा आ रही है तथा दूसरा वह लिखने समय काँपते हुए कहती है कि यदि मेरा प्रेमी मुझसे सच्चा प्रेम करता है तो मुझे उसे लिखने की आवश्यकता कोई नहीं है वह स्वयं ही मेरी दशा को जान लेगा। अतः वह नायक को पत्र नहीं लिख पा रही है।

(20) "अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर विश्राम गृह में जा रही हूँ" प्रस्तुत कथन ममता ने अपने मरणासन्न अवस्था में अकबर बादशाह के सैनिक के कानों में मुखरित किये थे जब वह मृत्यु की चरमसीमा पर थी तब उसने ये कथन कहे थे।

खण्ड - घ -

(21). "यह मेरी भिक्षा है आँचल पसारती हूँ" प्रस्तुत कथन बोधासिंह 'सूबेदार' की पत्नि 'हीरा' ने लहनासिंह से कहे थे क्योंकि उसने उनके बचपन के प्रेम को आदर्श प्रेम के समान आजीवन निर्वहन किया तथा उनको बचपन में छोड़ने से पहले अपनी जान पर खेल कर की अतः उसे पूर्ण विश्वास था कि वह उनकी मुराद अर्थात उनके पति एवं पुत्र की रक्षा अवश्य करेगा अतः उसने ये शब्द कहे थे।

(22). 'खादी का जन्म' पठित अंश 'आत्मकथा' के आधार पर एक अचानक रूप में जन्म के समान हुआ था। जब गाँधी जी अफ्रीका से भारत आये तो उन्होंने चारखे को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

देखा तक नहीं था, जब उन्होंने विदेशी वस्तुएँ एवं उनके दामों के बढ़ते मूल्यों को देखा तो उन्होंने स्वदेशी वस्त्रों को अपनाने के लिए जोर दिया एवं कई संघर्ष मार्ग में आये परन्तु उन्होंने अपराजितता के साथ बहन गंगाबाई के सहयोग से चरखे के प्रचलन को जनसामान्य में उदित किया एवं स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार प्रसार किया।

(23): यदि दीर्घ निश्वास का शब्दों में अनुवाद हो तो वह यही कहेगी कि आह! मेरा गोपालक देश क्योंकि इसमें देश पर निहित व्यंग्य किया है क्योंकि लेखिका की प्रिय गाय गौरा को किसी ग्वाले ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर उसे गुड़ में लपेटकर सुई खिला दी जिससे गौरा पीड़ित होकर काल का ग्रास बनना पड़ा था। जिस देश में गाय को माता के समान मानकर उसकी पवित्रता से पूजा की जाती है उस मूक पशु की मृत्यु को सौंपना कहाँ की श्रद्धा है? कहाँ का धर्म है। अतः लेखिका भारतीय देश को गोपालक होने पर व्यंग्य किया है।

(24). संकलित अंश 'राजस्थान के गौरव' के माध्यम महाराजा सूरजमल एवं पूज्य गोविन्द गुरु के चरित्र एवं समाजिक समरसता के योगदान अतुल्य एवं अमूल्य है जो निम्नलिखित है

(i) महाराजा सूरजमल- महाराजा सूरजमल बदनसिंह राजा के सबसे ज्येष्ठ पुत्र थे प्रारम्भ से ही उनमें साहस, पराक्रम, कूटनीतिज्ञता एवं राजनीतिज्ञता कूट-कूट कर भरी थी इसी विशेषता के चलते इन्हें भरतपुर, डीग, एवं कुम्हेर की रियासतों का राजा बनाया गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सामाजिक समरसता: इन्होंने अपनी प्रजा के लिए ही नहीं अपितु भरतपुर के रियासती स्तर के फैलाव के लिए हर संभव प्रयास किये। इन्होंने अपनी रियासत की रक्षा हेतु मीरबख्शी सलामतखां को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया एवं उनके सम्मुख शर्तें रखी कि - (i) पीपल के वृक्ष मुगल लेना नहीं काटेगी।
(ii) मंदिर देवालयों का सम्मान किया जायेगा उन्हें कोई क्षति नहीं पहुंचायी जायेगी।

इसतरह उन्होंने अहमद शाह अब्दाली को पत्र लिखकर उसका मनोबल तोड़ दिया जिससे वह कदाचित आक्रमण की सोच भी न सका।

गोविन्द गुरु: पूज्यनीय गोविन्दगुरु का व्यक्तित्व अत्यन्त अप्रतिम रहा है एवं उनके इन्हीं श्रेष्ठ कार्यों के पथपर अवतरित होते हुए उन्होंने सम्पसभा का आयोजन किया। जिसका मूल उद्देश्य वनवासियों को उनके दयितों से समान जीवन से उभारना था।

सामाजिक समरसता: इन्होंने जब ज्ञात किया कि वनवासी लोग चोरी, डकैती, अशिक्षा एवं व्यसनों से पीड़ित हैं तो उन्होंने इन्हें उभारने के लिए मानगढ़ के विशाल पहाड़ पर एक सभा आयोजित की जिसमें लाखों की तादात में वनवासी लोग आये परन्तु कर्नल शटल के आदेश पर वहाँ जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी वीभत्स हत्याएं करवा डाली गोविन्द गुरु को पेट में गोली लगी परन्तु उन्होंने जनआन्दोलन में हार नहीं मानी।
इसतरह दोनों महापुरुषों का योगदान अतुल्य एवं अविस्मरणीय है

→

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

25. वर्तमान में लेखन अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त एवं सर्वव्यापी माध्यम है क्योंकि लेख एवं गहन अध्ययन पर आधारित एक साहित्यिक रचना है जो पाठक के दिमाग को प्रभावित करती है वर्तमान मे अधिकतर कार्य पत्राचार एवं लेखन पर आधारित होते है लेख एक सशक्त माध्यम होता है जो सीधे ही पाठक को प्रभावित कर गहरा प्रभाव छोड़ देता है। आज के युग मे इन्टरनेट माध्यमों पर भी लेख का बड़ा ही महत्व है इसमें सभी लेखन आयामों के स्पर्श के साथ लेखक शैली अत्यधिक प्रभावी होती है।

26. फीचर पाठक केन्द्रित है / लेख

फीचर	लेख
(i) फीचर में विशेष विषय पर कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति चित्रांकित होती है।	(i) इसमे गहन अध्ययन के आधार पर गम्भीर स्तरीय लेखन होता है।
(ii) ये बहुआयामों से युक्त रहती है।	(ii) ये कई ही आयामों से युक्त रहती है
(iii) इसकी शैली कलात्मक एवं प्रभावात्मक होती है।	(iii) इसकी शैली केवल सरलता से युक्त होती है।
(iv) फीचर हृदय को प्रभावित करने वाला माध्यम है।	(iv) यह पाठक के दिमाग को सीधा प्रभावित करती है।

27. पत्रकारिता के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्र देखने को मिलते है जैसे- वाणिज्यिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, अपराधिक पत्रकारिता अदालती पत्रकारिता आदि।
खेल पत्रकारिता: आधुनिक युग में खेलों की बढ़ती →

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

महत्वा एवं प्रचलन के कारण आधुनिक युग में खेल पत्रकारिता का बड़ा ही महत्व है इस महत्व को देखते हुए आजकल समाचार पत्रों में एक अलग से खेलपृष्ठ सुनिश्चित कर दिया जाता है। इसके सम्प्रेषण के लिए प्रेषितकर्ता को खेलों से सम्बन्धित जानकारी, खेलसम्बन्धी सूक्ष्मदृष्टि, एवं आधुनिक विचारों से मण्डित होना चाहिए एवं पक्षपात एवं अन्य विकारों से रहित होना चाहिए।

28. रिपोतार्ज क्या है: रिपोतार्ज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। यह अंग्रेजी शब्द रिपोर्ट का संशोधित रूप है। जिसका मूल आधार सरलता एवं मधुरता होती है जो आँखो देखी कानों सुनी आभिव्यक्ति होती है। एक रिपोतार्ज में निम्न विशेषताएं अनिवार्यत: होनी चाहिए जो निम्नलिखित हैं-

(i) रिपोतार्ज एक सरल, सहज एवं बोधगम्य होना चाहिए।

(ii) रिपोतार्ज संक्षिप्त परन्तु पाठक के मन को प्रभावित करने वाला होना चाहिए।

(iii) रिपोतार्ज सहज एवं सरल होना चाहिए जो पाठक के मन में उत्सुकता पैदा करता हो।

(iv) रिपोतार्ज किसी घटना का आँखो देखा तथा कानों से सुना कलात्मकता से पूर्ण एवं तथ्यपरक एवं युक्तिपूर्ण होना चाहिए।

(29) साहित्य लेखन में डायरी का विशेष महत्व है सामान्यत: साहित्यिक डायरी प्रभावी एवं आकर्षणात्मक, संक्षिप्त, एवं सरल एवं बोधगम्यात्मकता की भावना से युक्त होनी चाहिए जो पाठक के मन को प्रभावित करते हुए प्रेरणादायी हो जिसके आधार पर पाठक का सर्वांगीण विकास हो सके। वस्तुत: एक साहित्यिक डायरी किसी साहित्यकार की कलात्मक एवं विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति होती है इसमें साहित्य का आत्मपरी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्मृतियों को विख्यातियों में परिवर्तित होने से बचाने के लिए उन्हें संजोये रखता है। ये अत्यन्त प्रभावी एवं अमिट छाप छोड़ने वाली होती हैं जिससे पढ़ने वाला पढ़कर आनन्दानुभूति कर सके और अपना जीवन मृदु बना सके इस तरह एक साहित्यिक डायरी का उतना ही महत्त्व है जितना कि एक जड़ से युक्त गद्यशैली में लिखी व्यक्तिगत डायरी का होता है।

कुछ डायरी लेखन की प्रमुख पत्रिकाएँ निम्न हैं- अपनी कलम से नवजागरण, जो, 'दैनिक जीवन' आदि कुछ प्रमुख साहित्यकारों द्वारा उल्लेखित रचनाएँ हैं।

"समाप्त"

परीक्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर